बेतिया ध्रुपद घराना (द्वितीय बनारस घराना-मूलस्त्रोत)

काशी से सम्बन्धित बितिया ध्रुपद घराने के प्रमुख आधारस्म्भ के रूप में प्राप्त प्रमाणों के आधार पर प्रथम नाम पं. शिवदयाल मिश्र का मिलता है जो मूलतः बनारस निवासी थे। आपके दो अन्य भाईयों का नाम क्रमशः पं. शिवराहुल मिश्र एवं पं. शिवशंकर मिश्र था। पं. शिवदायल मिश्र को ध्रुपद की चारों बानी पर विशेष अधिकार प्राप्त था। आपने अप्रचलित रागों-तालों में असंख्य ध्रुपदों की रचना की। आप ध्रुपद की चारों बानी के अप्रतिम, रससिद्ध विद्वान घराने के अनेक सुप्रसिद्ध विद्वानों के गुरू थे। अनेक मूर्धन्य, रससिद्ध ध्रुपद गायक आपकी शिष्य-परम्परा में दीक्षित हुए। अनेक वर्षों तक नेपाल के शाही राजदरबार के राजगायक पद को सुशोभित करने के पश्ताच् सन् १७९० ई. में आप नेपाल से बेतिया राजदरबार में कलाबन्त होकर आए और मृत्युपूर्व तक यहीं रहते हुए यहीं दिवंगत हुए। आपकी एकमात्र कन्या से क्रमशः जयकरन मिश्र, गुरुप्रसाद मिश्र एवं शिवनारायण मिश्र हुए। श्री जयकरन मिश्र की एकमात्र कन्या धन्यकुमारी से काशी के पं. बड़े रामदास मिश्र 'गायनाचार्य' का विवाह हुआ और इस प्रगाढ़ सम्बन्ध के फलस्वरूप गायनाचार्य जी को अपने श्वसुर से संगीत की विविध शैलियों की भरपूर शिक्षा मिली।

श्री शिवदयाल जी के प्रमुख शिष्यों में बेतिया नरेश राजा आनन्द किशोर, राजा नवल किशोर, तीनों पौत्र जयकरन मिश्र, गुरुप्रसाद मिश्र, शिवनारायण मिश्र, सदाशिव राव भट्ट, विश्वनाथ राव (पुत्र), एवं वख्तावर जी की विलक्षण संगीत-साधना एवं रससिद्ध संगीत विद्वता से संगीत जगत् सुपरिचित है। श्री गुरुप्रसाद जी अपने युग के मूर्धन्य ख्याल गायक थे। सन् १८८० ई. में आप कलकत्ता पहुँचे और राजा सौरीन्द्र मोहन ठाकुर के दरबारी कलावन्त नियुक्त हुए। कलकत्ता प्रवास काल में श्री विश्वनाथ राव भट्ट (विलक्षण ध्रुपद गायक) श्री गुरुप्रसाद मिश्र श्री शिवनारायण मिश्र के शिष्य हुए, जिन्हें प्रथमतः संगीत की शिक्षा अपने पूज्य पिता पं. सदाशिव राव भट्ट से मिली, जो पं. शिवदयाल मिश्र

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.